

संपादक की कलम से

बन्दूक-संस्कृति से दागदार होती अमेरिकी छवि

दुनिया में स्वयं को सभ्य एवं स्वयंभू मानने वाले अमेरिका में बढ़ रही बंदूक संस्कृति के साथ-साथ लोगों में बढ़ रही असहिष्णुता, हिंसक मनावृत्ति और आसानी से हथियारों की सहज उपलब्धता का दुष्परिणाम बार-बार होने वाली दुखद घटनाओं के रूप में सामने आना चिन्नाजनक है। अमेरिका में एक हत्यारे ने गोलियां बरसाकर करीब 21 लोगों को मौत की नींद सुला दिया और कई को जख्मी कर दिया है। तीन स्थानों पर गोलीबारी करने के बाद हत्यारा घटनास्थल से भागने में सफल हुआ है और आश्वर्यकरी है कि दुनिया की सबसे दुरस्त एवं सक्षम अमेरिकी पुलिस एक हत्यारे को पकड़ने में इतनी लाचार हो गई कि उसे सहयोग के लिए आम लोगों से अपील करनी पड़ी। हिंसा की बोली बोलने वाला, हिंसाने वाला अमेरिका की जमीन में खाद एवं पानी देने वाला, दुनिया में हथियारों की आंधी लाने वाला अमेरिका अब खुद हिंसा का शिकार हो रहा है। अमेरिका की आधुनिक सभ्यता की सबसे बड़ी मुश्किल यही रही है कि यहां हिंसाने इतनी सहज बन गयी है कि हर बात का जवाब सिर्फ हिंसा की भाषा में ही दिया जाने लगा। वहां हिंसा का परिवेश इतना मजबूत हो गया है कि वहां की बन्दूक-संस्कृति से वहां के लोग अपने ही घर में बहुत असुरक्षित हो गए थे। अमेरिका को अपनी बिगड़ती छवि के प्रति सजग होना चाहिए क्योंकि यह एक बदनुमा दाग है जो उसकी अन्तर्राष्ट्रीय छवि को आधात लगा रहा है। दुनिया में बंदूक की संस्कृति को बल देने वाले अमेरिका के लिये अब यह खुद के लिये एक बड़ी समस्या बन चुकी है। अमेरिका धृणा, अपराध, हिंसा और बंदूक संस्कृति के गढ़ के रूप में पहचान बना रहा है। किसी सिख या किसी मुस्लिम बच्चे की हत्या हो या किसी अश्वेत पर बर्बरता, अमेरिका की स्थिति लगातार निंदनीय, डरावनी एवं असंतुलित होती जा रही है। कोई भी सामान्य सा दिखने वाला आदमी हथियार लेकर आता है और अनेक लोगों की जान ले लेता है। नवीनतम घटना 25 अक्टूबर को देर रात एंड्रेस्कोगिन काउंटी के अंतर्गत पड़ने वाले लेविस्टन में हुई, इस हादसे का सबसे खराब पहलू यह है कि अनेक लोग भगदड़ की वजह से घायल हुए तो अनेक हत्यारे की गोलियों से गहरी नींद सो गये हैं। नरसंहार के कथित आरोपी 40 वर्षीय रॉबर्ट कार्ड को पुलिस ने हथियारबंद और खतरनाक व्यक्ति माना है, पर सवाल है कि व्यक्ति वह रातों-रात हत्यारा एवं हिंसक हुआ है? हत्यारा रॉबर्ट कार्ड अमेरिकी सेना से जुड़ा रहा है और आगेन्यात्र प्रशिक्षक है। मानिसिक अस्वस्था एवं मनोविकारों से ग्रस्त हत्यारे के खिलाफ अनेक शिकायतें पहले भी मिल चुकी थी, प्रश्न है कि उन्हें क्यों नहीं गंभीरता से लिया गया अमेरिका में आए दिन ऐसी खबरें आती रही कि किसी सिरपिरे ने अपनी बंदूक से कहीं स्कूल में तो कभी बाजार में अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और उसमें नाहक ही लोग मारे गए। अब तो अमेरिकी बच्चों के हाथों में भी बन्दूकें हैं। इसके पीछे एक बड़ा कारण वहां आम लोगों के लिए हर तरह के बंदूकों की सहज उपलब्धता है और इन बन्दूकों का उपयोग मामूली बातों और उन्मादग्रस्त होने पर अंधाधुंध गोलीबारी में होता रहा है, जो गहरी चिन्ता का कारण बनता रहा। आम जन-जीवन में किसीसे सिरपिरे व्यक्ति की सनक से किसी बड़ी अनहोनी का अन्देशा हमेशा बहाना रहता है, वहां की आस्थाएं एवं निष्ठाएं इतनी जख्मी हो गयी कि विश्वास जैसा सुरक्षा-कवच मनुष्य-मनुष्य के बीच रहा ही नहीं। साफ़ चेहरों के भीतर कौन कितना बदसूरत एवं उन्मादी मन समेटे है, कहना चाहिए। अमेरिका की हथियारों की होड़ एवं तकनीकीकरण की दौड़ पूरी मानव जाति को ऐसे कोने में धकेल रही है, जहां से लौटना मुश्किल हो गया है।

के. विक्रम राव
कामसूत्र पर साधु समाज में चर्चा।
निजी पूँजी की श्रेष्ठता पर माओवादी
सभा में गोष्ठी। क्या अभिप्राय होता है ?
ठीक ऐसा ही हुआ 25 अक्टूबर को
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी
विश्वविद्यालय (वर्धा) में। यहां ब्रिटिश
नृशंस उपनिवेशवादी थॉमस मैकाले की
223वीं जयंती मनाने की तैयारी की
गई। कार्यभारी कुलपति दलित
प्राध्यापक लेल्ला कारुण्यकर ने यह
सब रचा। वे अंबेडकर दलित अध्ययन
केंद्र के निदेशक भी हैं। तेलुगुभाषी हैं।
लखनऊ में भी रहे हैं। भला हो
राष्ट्रवादी छात्रों का जिन्होंने बवंडर
उठाया कि भारतीय शिक्षा पद्धति के घोर
शत्रु और नाशक मैकाले की जन्मगांठ
बापू की संस्था में न मने ? मानो कृष्ण
मंदिर में गौहत्या होने से बच गई।
विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार कादर
नवाज खान ने तत्काल नोटिस द्वारा प्रो.
कारुण्यकर को निर्देश दिया कि भारतीय
संस्कृति, दृष्टि और भावना के विपरीत
रहे मैकाले की जयंती कदापि न मनाई
जाए। मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति-
2020 से ऐसा समारोह तालमेल नहीं
रखता। शायद ही भारत का कोई शिक्षा
संस्थान है जिसका इतना सीधा नाता
राष्ट्रपिता से रहा हो तथा जहां नीति
गांधीवादी चिंतन, नीति, कार्य, निर्णय
और व्यवहार के सरासर प्रतिकूल ऐसा
हुआ हो।

सरकार ने सन् 1996 में संसद द्वारा पारित एक अधिनियम द्वारा की थी। मगर यह शिक्षा संस्थान कम्युनिस्ट और कांग्रेस सत्तावाङों की कुट्रीनीतियों का केंद्र रहा। जब रिटायर्ड पुलिसवाले वीएन राय इसके कुलपति नामित हुए तो इसमें बिना अर्थता, योग्यता और अमान्य लोगों की कई नियुक्तियाँ की गईं। अतः उनके जाते ही, वे सब हटा दिए गए। इस विश्वविद्यालय के कुलपति रहे प्रकाण्ड विद्वान् पं. मिरीश्वर मिश्र जी ने इन घटनाओं पर क्षोभ तथा विषाद व्यक्त किया है। उनके अग्रज स्व. पं. विद्यानिवास मिश्र जी नवभारत टाइम्स के संपादक रहे हैं।

तालाम का प्रादुर्भाव है कल्याणकारी स्तर पर भी पाया। फल गांधीजी के और सही असमर्थ रहा देश में पूर्णशिक्षण-संस्थान सक्रिय तो है बाहर हैं। भासे से अधिक व बच्चों की जिज़िन्होंने विद्या है है। जो विद्यार्थी हैं, उन्हें लॉ चली आ अतिरिक्त कु अतः चर्चा राजनेता बड़

शन एव प्राक्तया का
। दुर्भाग्यवश इस
क्षाप्रणाली का राष्ट्रीय
मुचित प्रयोग नहीं हो
रूप आजतक भारत
नों के अनुरूप सार्थक
राज प्राप्त करने में
तियों पर आश्रित सभी
व्यावसायिक रूप में
पर गरीबों की पहुंच से
की स्वाधीनता के 75
वीतने के पश्चात भी ऐसे
या काफी अधिक है,
ये के द्वार तक नहीं देखे
जाने का सामर्थ्य रखते
मैकाले की परम्परा से
। अंग्रेजी शिक्षा के
प्राप्त नहीं होता।
मैकाले पर ही। यह
स्पष्ट था कि भारतीय

काशा पद्धति एसा हा इक कवल ट्राईट
ज के लिए क्लर्क, दफतरी, चपरारायार करें। गुलाम हिंदुस्तानियों में ही वाना भरी जाए। असली चिंतनशील स्तिष्ठक के कवल मानसिक परछाइ बनी रहें। स्वतंत्र भारतीय सोच कूलों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजों ना चाहिए। पाठ्यक्रम पश्चिमी मूल और विचारों पर आधारित होना चाहिए। यहाँ सिफारिशों को लागू किया गया और अंग्रेजी ही भारतीय स्कूलों की शिक्षा की प्रमुख भाषा बन गई। इसीलिए विद्रोनाथ टैगोर ने शांति निकेतन वापना की।

गुरुकुल प्रणाली को मजबूत बनाया गया। अश्वेत मनोवैज्ञानिक डॉ इंटेज उमर फेनन तथा कवि-राजनेता इमे सीजेर ने फ्रांसीसी उपनिवेशवासियों विरुद्ध अपनी स्वाधीन राष्ट्र के लिए

दर्शी भाषा का संघर्ष चलाया था। ऐसा ही संघर्ष पुरतगाली राज के भाषायी शोषण के खिलाफ गुलाम गोवा में ट्रिस्टों ब्रांजा कुहंडों ने चलाया था। मगर भारत में संगठित और सुनियमित प्रयास गाधी जी का ही था। जब भारत आजाद हुआ तो विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के अध्यक्ष के नाते 1949 में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन (बाद में राष्ट्रपति) ने धार्मिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने का सुझाव रखा था। पर कथित सेक्युलर जवाहरलाल नेहरू ने इसे नहीं माना। आखिर यह थॉमस मैकाले था कौन? ब्रिटिश राज में यह युद्ध सचिव और पोस्टमास्टर जनरल था। भारत को भ्रष्ट करने की नीयत उसने स्पष्ट कर दी थी। उसने कहा था, मैंने भारत की चारुदिक यात्रा की है और मुझे इस देश में एक भी याचक अथवा चोर नहीं दिखा, मैंने इस देश में सांस्कृतिक संपदा से युक्त उच्च नैतिक मूल्यों तथा असीम क्षमता वाले व्यक्तियों के दर्शन किए हैं। मेरी इष्टि में आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत जो कि इस देश का मेरुदंड रीढ़ है उसको खंडित किए बिना हम इस देश पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

लार्ड मैकाले ने तब प्रस्ताव किया कि इस देश की प्राचीन शिक्षा पद्धति, उनकी संस्कृति को इस प्रकार परिवर्तित कर दें। परिणाम स्वरूप भारतीय यह सौचने लगें कि जो अंग्रेज ही श्रेष्ठ एवं महान हैं। इस तरह से वे अपना आत्मसम्मान, आत्म गौरव तथा उनकी अपनी मूल संस्कृति को खो देंगे और वह वही बन जाएंगे जो कि हम चाहते हैं, पूर्ण रूप से हमारे नेतृत्व के अधीन एक देश। भारत की संपत्ति उनकी शिक्षा में है हम उनकी शिक्षा पद्धति को जब बिगाड़ देंगे तब भारत हमारे अधीन हो जाएगा। इंग्लॉड की संसद में भाषण : 2 फरवरी 1835। तो ऐसे व्यक्ति थे मैकाले, जिन्हें प्रो. करुणाकरजी अपना हीरो मानकर पेश कर रहे थे। उन्होंने इस बापू के नामवाले शीर्ष संस्थान का बेड़ा गक्करना चाहा। मगर विफल रहे।

वर्धा विश्वविद्यालय में गांधी के नाम पर तिजारत



डॉक्टरों पर हमला करने वालों को भेजो जेल

आर.के. सन्धा
पिछले दिनों राजधानी में सैकड़ों डॉक्टर राजघाट पर एकत्र हुए। ये वही डॉक्टर हैं, जो जानलेवा कोरोना की दूसरी लहर के समय भगवान के दूत बनकर रोगियों का इलाज कर रहे थे। लेकिन, अब ये डर-सहमे हुए हैं। इनकी डर की बजह यह है कि इन पर होने वाले हमलों और दुर्व्यवहार के मामलों की घटनाओं में तेजी से वृद्धि हो रही है। केन्द्र सरकार से यह मांग कर रहे हैं कि वो तुरंत ही कोई सख्त कानून लेकर आए ताकि डॉक्टर बिना किसी भय भाव के काम सकें। फिलहाल तो डॉक्टरों पर हमले लगातार बढ़ते ही चले जा रहे हैं। आप स्वयं गूगल करके देख लें। आपको डॉक्टरों पर हमलों के अनगिनत मामले मिलेंगे। बेशक, डाक्टरों के साथ बदतमीजी या मारपीट करना किसी भी सभ्य समाज में सही नहीं माना जा सकता। इसकी भरपूर निंदा तो होनी ही चाहिए और जो इस तरह की अक्षम्य हरकतें करते हैं, उन्हें कठोर दंड भी मिलना चाहिए। बेशक, देशभर में हजारों-लाखों निष्ठावान डॉक्टर हैं। वे रोगी का पूरे मन से इलाज करके उन्हें स्वस्थ करते हैं। आपको पटना से लेकर लखनऊ और

दल्ला स मुबाइ समत दश क हरक शहर और गांव मे सुबह से देर रात तक कड़ी मेहनत करते ए हजारों डाक्टर बधु मिल जाएंगे।

इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे डॉ. विनय अग्रवाल भी उस मार्च में शामिल थे जो राजघाट पर पहुंची थी। उनकी माग है कि डॉक्टरों पर हमले करने वालों पर 5 लाख रुपये तक का जुमार्ना और तीन साल तक की कैद हो। ये सारे कदम इसलिए उठाए जाने की जरूरत है ताकि डॉक्टरों पर हमले करने के बारे में कोई सपने में भी न सोचे। डॉ. विनय अग्रवाल कोरोना काल में किसी फरिश्ते की तरह कोरोना की चपेट में आए लोगों को अस्पताल में बेड दिलवा रहे थे। यह उन दिनों की बातें हैं जब कोरोना के रोगियों के संबंधी अस्पतालों में बेड तलाश रहे थे। निश्चय ही उस डरावने दौर को याद करते ही दिल बैठने लगता है जब कोरोना के कारण प्रलय वाली स्थिति बन गई थी। तब कोरोना के रोगियों के इलाज करने के लिए सिर्फ डॉक्टर और उनका स्टाफ ही सामने आ रहे थे। उस भयानक दौर में डॉ. विनय अग्रवाल और उनके साथी डॉक्टर दिन-रात रोगियों का इलाज

कर रह थे। उन्हान उस दारान सकड़ा कोरोना रोगियों के लिए बेड की व्यवस्था करवाई थी। आज वे ही डॉक्टर अपनी जान की रक्षा करने के लिए सरकार से गुजारिश कर रहे हैं। यह वास्तव में बेहद दुखद स्थिति है। आप कभी राजधानी में देश के चोटी के राममोहर लोहिया अस्पताल यानी आरएमएल में जाइये। वहाँ की इमरजेंसी सेवाओं में हर समय करीब एक दर्जन बलिष्ठ भुजाओं वाले बाउंसर तैनात मिलते हैं। यहाँ पर मरीजों के दोस्तों और ?श्तेरारों के डाक्टरों के साथ कई बार हाथापाई करने के बाद अस्पताल मैनेजमेंट ने बाउंसरों को तैनात कर दिया है। जब से यहाँ पर बाउंसर रहने लगे हैं तब से अस्पताल में शांति है। वर्ना तो लगातार डॉक्टरों के साथ बदसलूकी और मारपीट के मामले सामने आते थे। कई बार डॉक्टरों को इलाज में कथित देरी या किसी अन्य कारण के चलते कुछ सिरफिरे लोग मारने-पीटने भी लगते थे। यहाँ पर कुछ महिला बाउंसर भी हैं। याद रख लें कि अगर डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में भी डॉक्टर सुरक्षित नहीं हैं तो फिर बाकी जगहों की बात करना बेकार है। राम मनोहर लोहिया अस्पताल में सरकारा और मार्मा कोरोना अनिन्दन राजधानी नारायण को बचाने करीब अस्पताल की थी। बचाने तीमारदान उस सुरक्षा डॉक्टरों उसका है के बाद ने बाउंसर अस्पताल आपको के दौसा जब एक ने आत्म देशभर दे चीख-चीख रही थी डॉक्टरों

बाबुआ स लकर दश का सासदार यों तक का इलाज होता है। अकाल में यहाँ के डॉक्टरों ने लोगों की जानें बचाई थीं। के ही लोकनायक जयप्रकाश अस्पताल ने भी अपने डॉक्टरों के लिए बाउसर रख दिए हैं। साल लोकनायक जयप्रकाश में गार्ड की तीमारदारों ने मारपीट दल्ली पुलिस के जवान जब तक आते तब तक सुरक्षाकर्मी को मारपीट कर चुके थे। यह हाल नायकर्मी का था जिसके कंधे पर को बचाने की जिम्मेदारी थी। थ तक टूट गया था। इस घटना नोकनायक जयप्रकाश अस्पताल नरों को लगाया। इन दोनों में सारे देश से रोगी पहुंचते हैं। छले कुछ महीने पहले राजस्थान जले की उस घटना की याद होगी। महिला डॉक्टर डॉ. अर्चना शर्मा त्या कर ली थी। उस घटना से डॉक्टर सहम गए थे। वह घटना ब व कर इस चिंता की पुष्टि करक वक्त आ गया है कि देश के नो पर्याप्त सुरक्षा दी जाए।

चीन, सूस और ईरान का अमेरिका के विरुद्ध पड़यांग्र

की विदेश मंत्री एथोनी ब्लिंकन क
कहा है कि इस सभा में स्पष्ट
है कि तो कुछात आतंकवादी
हमास, हिजबुल्ला और
इरान प्रयत्नशक्ति सभा को इरान
के सामरिक सहायता कर
ता का विरोध करता आ रहा
करने के कहा हमास के इसराइल
में अमेरिका परी तरह से
के साथ खड़ा है और वह
अन्य देश के हमले से इजरायल
करने के लिए प्रतिबद्ध है
का आक्रमण इजरायल की प्रभु
तो चुनौती देने वाला है इसलिए
करने का हमास पर आक्रमण करने
पूरा वैधानिक हक है इजरायल
नी जनता तथा अपनी भूमि की
करने का पूरा अधिकार है
न अपना करत्व निभा रहा है
ने स्पष्ट कहा है यदि ईरान,
सीरिया या लेबनान अमेरिकी

उरंत माकूल जवाब दिया जाएगा' इधर
ईरान के प्रमुख आयतुल्लाह खुमैनी ने
कहा कि गाजा पट्टी में निर्दोष नागरिकों
तथा बच्चों महिलाओं की हत्या का
सारा दोष अमेरिका प्रशासन को जाता
है जिसने इसराइल को गाजा पट्टी पर
निर्दोष नागरिकों पर आक्रमण करने की
खुली छूट देकर रखी है और यदि
अमेरिका इस युद्ध में शामिल होता है तो
खाड़ी के अनेक राष्ट्र शामिल होंगे
जिसकी सारी जिम्मेदारी अमेरिका पर
होगी। यह बात पूरी दुनिया को मालम है
कि हमास के पीछे ईरान और मिडिल
ईस्ट के कई देश शामिल हैं और ईरान
के पीछे ड्रैगन तथा रूस का खुला
समर्थन है। चीन और रूस ने
फिलिस्तीन तथा हमास को अपने
समर्थन का ऐलान किया है। रूस
चाहता है कि अमेरिका का ध्यान रूस
यूक्रेन युद्ध से हट जाए और वह यूक्रेन
को पूरी तरह नष्ट कर अपने देश की
सीमा में शामिल कर ले। इसी तरह की
चाहत चीन ने भी पाल कर रखी है वह
ताइवान के मामले में अमेरिकी हस्तक्षेप
देने वें है और उसी तरह हमास

पूर्ण युद्ध विद्यान बनान मानवीय विद्यान



A photograph showing a group of people, including men in casual clothing, standing amidst the extensive rubble and damaged structures of a residential area in Gaza. The scene is one of widespread destruction, with twisted metal, broken concrete, and charred remains of what were once houses.

अमेरिका और सहयोगी देशों ने रूस के प्रस्ताव पूर्ण युद्ध विराम को भी बीटो से खारिज कर दिया तो वहाँ रूस चीन व साथियों ने अमेरिका के मानवीय विराम प्रस्ताव को भी खारिज कर दिया। जबकि युद्ध का दायरा विस्तृत होते जा रहा है। थल यानी जमीनी सी तैयार है और एक-दो दिनों में यह कार्रवाई करते हुए दिख रही है निर्वाच जनता जिसका उदाहरण हम अस्पताल पर बमबारी से 500 से अधिक व्यक्तियों के हताहत होने, रहवासी क्षेत्रों में मिसाइल, लाखों लोग विस्पतिक, विश्वापित होने, मानवता के मूल्य में गिरावट जैसे अनेक सकितों से हम कर सकते हैं अब जरूरत है पूरे विश्व को एक मत से दुनिया आज को तीसरे युद्ध के मुंह पर खड़ी युद्ध से बचाना हिंसा को रोकना है। चूंकि हिंसा के अनेक रूप हैं, दिनांक 26 अक्टूबर 2023 को अमेरिका में फिर से गोली से 19 नागरिकों के हताहत होने की जानकारी मिली तो बहुती अमेरिका के गश्पति

शाया आर्थिक गलियारा से चढ़कर हमास की हालत बदल जाती है। हमला जैसी बातें सामने आ रही हैं। इसलिए अब युद्ध बंद करने की सख्ती लग रही है। इसलिए आज हम मीडिया ने अलब जानकारी के सहयोग से इसकी विवरणीकरण की जा रही है। अंटिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, गज़ा और गज़ायल में बमबारी, अमेरिका रूस दोनों देशों द्वारा दोनों देशों की बाजी हारी, शह मात्र का खेल जारी रही।

यथों वात अगर हम 25 अक्टूबर 2022 को यूएनएससी युद्ध विराम की सभा की कंपीज़ गाजा पट्टी में इजराइल की बमबारी वेंटर च संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक के दौरान द्वारा पाई। बुधवार को हुई बैठक में अमेरिका और रूस ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में यूएनएससी) में दो अलग-अलग प्रस्ताव पेश किये गए। लेकिन दोनों खारिज हो गए। मिडिल एस्ट को लेकर रूस और चीन ने अमेरिका के दोनों देशों में इजराइल और हमास के बीच जारी रखी राही।

प्रस्ताव को बीटो कर दिया है। महासभा ने पहले ही गुरुवार को फिलिस्तीन पर 104 देशों के साथ एक आपातकालीन सत्र तय किया था औरपिलिस्तीन और यूगोलीय संघ ने बोलने के लिए बुधवार शाम तक हस्ताक्षर किए थे। (भारत वक्ताओं की सूची में नहीं था इसमें युद्धविराम के लिए एक प्रस्ताव पारित होने की संभावना थी, जो केवल प्रतीकात्मक होगा, क्योंकि इसके पास परिषद के समान प्रवर्णन शक्तियां नहीं हैं।) अमेरिकी स्थायी प्रतिनिधि ने मॉस्को पर बरे विश्वास में कार्य करने और अंतिम क्षण में बिना परामर्श के कई समस्याग्रस्त वर्गों के साथ प्रस्ताव पेश करने का आरोप लगाया। गाजा पट्टी में इजरायल और हमास के बीच जारी जंग पर अमेरिका द्वारा तैयार संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव पर रुस और चीन ने बुधवार को बीटो कर दिया है। मसौदे का उद्देश्य गाजा में बिगड़ते मानवीय संकट को संबोधित करना था जिसमें स्थानीय पहनच

आहान किया गया था. संयुक्त अरब अमीरात ने भी नहीं में मतदान किया, जबकि 10 सदस्यों ने पक्ष में मतदान किया और दो अनुपस्थित रहे. जनकारी के मुताबिक, मिडिल ईस्ट में इंजरायल और हमास के बीच जरी युद्ध को लेकर रूस और चीन ने अमेरिका द्वारा तैयार संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव को बीटो कर दिया है, जबकि रूस अपने प्रस्ताव को पास करने के लिए फैल हो गया। न्यूज एंजेंसी रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार, गाजा पट्टी में इंजरायल की बमबारी के बीच संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक में युद्ध विराम पर एक बार फिर सहमति नहीं बन पाई, बुधवार को हुई बैठक में अमेरिका और रूस ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में दो अलग-अलग प्रस्ताव दिए, लेकिन दोनों खारिज हो गए। अमेरिका ने जहां रूस के प्रस्ताव के खिलाफ बीटो किया वहीं, चीन और रूस ने अमेरिका के प्रस्ताव को पर अपनी बीटो की शक्ति का

